जल्दी ही लुप्त हो जाएंगे कई जीव जंतु

जलवायु परिवर्तन की वजह से तो कई प्राणियों पर संकट है ही, जलवायु बदलाव से निपटने के लिए जो प्रयास किए जा रहे हैं, उनसे भी संकट बढ़ता जा रहा है। कम से कम बंदरों की कुछ प्रजातियों के लिए तो ऐसा ही प्रतीत हो रहा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यक्रम 'ग्रेट एप्स सर्वाइवल प्रोजेक्ट' यानी ग्रैस्प) ने आगाह किया है कि अगर जल्द ही सख्त कदम न उठाए गए तो ग्रेट एप्स (जैसे गोरिल्ला, चिंपैंज़ी, ओरांगुटान आदि) का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। वन्य जीव विशेषज्ञ डॉ. राबर्ट लीकी कहते हैं, "मैं जलवायु परिवर्तन से चिंतित हूं। इसका हम सब पर असर पड़ रहा है, लेकिन इससे निपटने के लिए जो कुछ किया जा रहा है, वह भी चिंताजनक है।" डॉ. राबर्ट का इशारा जीवाश्म ईंधन की बजाय बायो ईंधन पर ज़ोर देने से है। वे बताते हैं कि दक्षिण एशिया में जंगलों को ताड़ की खेती के नाम पर नष्ट किया जा रहा है। ताड़ का इस्तेमाल बायो ईंधन में करने की योजना है लेकिन इसके चक्कर में जो वन समाप्त किए जा रहे हैं, उसका असर वहां रहने वाले ओरांगुटान पर पड़ेगा। इससे उनके प्राकृतवास छिन जाएंगे और आगे चलकर उनका अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा।

इस प्रकार देखा जाए तो ओरांगुटान और बंदर प्रजाति के अन्य प्राणी दो पाटों के बीच फंसे हुए हैं। जीवाश्म ईंधन के अंधाधुंध इस्तेमाल से ग्लोबल वार्मिंग हो रहा है जिसका प्रत्यक्ष असर बंदरों सहित सभी प्राणियों पर हो रहा है। जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल को रोकने के लिए अगर ताड़ से बायो ईंधन बनाने के प्रयास किए जाते हैं तो भी उसका असर बंदरों पर पड़ेगा। यानी समुचित प्रयास न करने पर बंदर प्रजाति के प्राणियों का लुप्त होना तय माना जा रहा है। इस बारे में डॉ. राबर्ट बताते हैं कि यह दुखद समय जल्दी ही आ सकता है। शायद हमारे जीवनकाल में न हो, लेकिन अगले 100 से 200 साल के भीतर हम अपने पूर्वजों को पूरी तरह से कूच करने को मजबूर कर देंगे।

उधर, इसी तरह की समस्या पक्षियों के सामने भी आ रही है। एक शोध के अनुसार जलवायु परिवर्तन और प्राकृतवासों के नष्ट होने के कारण पक्षियों की 400 से 900 प्रजातियों का अस्तित्व वर्ष 2050 तक समाप्त हो जाएगा। इस सदी के अंत तक यह संख्या लगभग दुगनी हो जाएगी। शोधकर्ताओं के मुताबिक इसकी एक वजह मौसमी बदलाव तो होगी ही, लेकिन साथ ही खेती के लिए जंगलों का सफाया भी इन पक्षियों पर भारी पड़ेगा। जंगल नष्ट होने से पक्षियों के प्राकृतवास भी खत्म हो जाएंगे जिससे इनके लिए अपना अस्तित्व बनाए रखना असंभव हो जाएगा।

इस विश्लेषण में संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दि पारिस्थितिकी आकलन के तहत जुटाए गए आंकड़ों का भी इस्तेमाल किया गया। यह वर्ष 2001 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा पांच साल के लिए शुरू किया गया प्रोजेक्ट था जिसका मकसद विश्व के पारिस्थितिकी तंत्र का अत्याधुनिक आकलन करके उसके संरक्षण के उपाय सुझाना था। इसमें 1300 से भी अधिक विशेषज्ञ शामिल थे। ***(स्रोत फीचर्स)***